International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in November 2024, ISSN -2393-8048

पं० दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद की वर्तमान में प्रासंगिकता

प्रो0 विनीता पाठक, आचार्या, राजनीतिक विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
दीपक कुमार, शोध छात्र, राजनीतिक विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

प्रस्तावना

स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय राजनीति में एक ऐसा नाम उभर कर सामने आता है जिसने भारतीय राजनीति में समाप्त हो रही शुचिता, नैतिकता, उत्तरदायित्व बोध, निःस्वार्थ परसेवा भाव, निष्पक्षता जैसे आदि मुल्यों को पुर्नस्थापित करने के लिए अपना संम्पूर्ण जीवन राष्ट्र सेवा को समर्पित कर दिया जिसे हम आज पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नाम से जानते हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 ई० को मथुरा जिले के एक छोटे से गांव नगला चंद्रभान में हुआ था। इनके पिता भगवती प्रसाद एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे और मां श्रीमती राम प्यारी देवी एक धार्मिक विचारधारा वाली महिला थी। कम उम्र में ही दीनदयाल जी को अपने माता–पिता के प्यार से वंचित होना पड़ा। अपनी अकादमिक स्तर की शिक्षा दीक्षा मामा श्री राधारमण शुक्ल के सहयोग से पूरा किया। और आगे चलकर दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक में एक सेवक की भांति प्रवेश किया और अपनी प्रतिभा के बल पर एक दिन संघ के अध्यक्ष पद तक पहुंचे। अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए अपूर्व मेधा के धनी पंडित दीनदयाल ने मूल्य आधारित राजनीति करते हुए भारतीय राजनीति में विपक्ष के सबसे बड़े नेता के रूप में अपने आप को प्रतिष्ठापित किया। पं० दीनदयाल उपाध्याय ने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र निर्माण व समाज के हित में लगाने का निर्णय लिया और आगे चलकर समाज को समता, समानता एवं सर्वोदय पर आधारित जीवन जीने का एक नवीन मार्ग और दर्शन का प्रतिपादन किया जिसे एकात्म मानववाद दर्शन के नाम से जाना जाता है।

एकात्म मानववाद की ऐतिहासिकता

एकात्म का अर्थ क्या है? भारतीय विचार दर्शन वैदिक विचारधारा की जन्मदात्री है जो कि विश्ववादी विचारधारा को अपने आवरण में समाहित किया है जो कि 'माता भूमिः पुत्रों अहम् पृथ्व्याः' जिसका अर्थ है भूमि माता है व हम पृथ्वी के पुत्र है। भारतीय विचार में वैदिक उपनिषद व कर्मकाण्ड की प्रधानता होती है जिसमें ब्रह्म को एक अलौकिक स्थान प्राप्त है। यहीं ब्रह्म चराचर जीवन जगत, प्रकृति, मनुष्य और समाज को तर्कयुक्त सम्बन्ध बनाता है। जिसके मूल शाखा में भारत के मूल धरोहर, वेद, पुराण, उपनिषद शास्त्र सभी कालान्तर में किसी न किसी रूप में एकात्म मानववाद का परिपूर्ति करता है। पं० दीनदयाल उपाध्याय जी की पृष्ठभूमि से स्पष्ट है कि वे एक श्रेष्ठ चिन्तक मनीषी थे। उनकी अधिकांश कृतियां, लेख, बौद्धिक चर्चा आदि के केन्द्र में राष्ट्र, राष्ट्रीयता, हिन्दुत्त्व, भारतीयता, समाज, राष्ट्रत्मा विश्वात्मा जैसे विषय होते थे। वे इन विषयों के प्रवक्ता एवं प्रतिपादक थे। चिन्तनशील व्याक्तित्व के कारण वे भारत के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की पीठिका तैयार कर समकालीन समरयाओं का समाधान तथा भावी भारत व विश्वमानवता के लिए सिद्धान्त एवं नीतियां तैयार करते थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ता और प्रचारक होने के कारण वे भारत के गौरवास्पद अतीत से प्रेरणा लेकर चिन्तन करते थे। 1937 में वेदमूर्ति पं० सातवलेकर जी कानपुर में जब संघ की शाखा में आये थे तो पं० दीनदयाल उपाध्याय जी के तेज को देखकर भविष्यवाणी किये थे कि किसी दिन यह कुशाग्र बुद्धि बालक बड़ा होकर देश का गौरव बनेगा। आगे चलकर यह सिद्ध हुआ। अपनी इसी कुशग्रता का परिचय उन्होंने भारतीय जनसंघ के महामंत्री के दायित्व के निर्वहन में दिया। जीवनपर्यन्त भारत 'एकात्मतास्तोत्र' के पाठ से अपनी दिनचर्या प्रारम्भ करने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी भारत के गौरवशाली अतीत से तो परिचित थे ही, साथ ही भारत के राष्ट्रीय जीवन की विविधता तथा अनेकता में आंतरिक एकता का प्रत्यक्ष अनुभव करते थे जो उनके दार्शनिक चिन्तन में सूत्रवत अभिव्यक्त हुई। एकात्ममानवदर्शन की वैचारिकी को जब पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारतीय जनसंघ के दिनांक 20–25 अप्रैल 1965 को मुम्बई में जनसंघ की सिद्धान्त और नीति प्रलेख में उद्घोषित किया तो उसकी प्रस्तावना में उन्होंने पल्लवयुगीन आचार्य आद्य शंकराचार्य तथा मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य का स्मरण करते हुये कहा कि 'आज भारत के इतिहास में क्रान्ति लाने वाले दो पुरूषों की याद आती है। एक वह जब जगदगुरू शंकराचार्य सनातन वैदिक धर्म का समाचार लेकर देश में व्याप्त अनाचार समाप्त करने चले थे और दूसरा वह जब अर्थशास्त्र को धारण कर संघ राज्यों में बिखरी राष्ट्रीय शक्ति को संगठित कर साम्राज्य की स्थापना करने चाणक्य चले थे। आज इस प्रारूप को प्रस्तुत करते समय वैसा ही तीसरा महत्वपूर्ण प्रसंग आया है, जबकि विदेशी धारणाओं के प्रत्तिबिम्ब पर आधारित मानव सम्बन्धि अधूरे व अपुष्ट विचारों के मुकाबलें विशुद्ध भारतीय विचारों पर आधारित मानव कल्याण का सम्पूर्ण विचार 'एकात्ममानववाद' के रूप में उसी सुस्पष्ट भारतीय विचारों दृष्टिकोण को नये सिरे से सूत्रबद्ध करने का

काम हम प्रारम्भ करते रहे है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय की इस नव दार्शनिक चिन्तन की स्थापना में भारत की ऐतिहासिकता आचार्य परम्परा के दो प्रमुख आचार्यों जगदगुरु शंकराचार्य तथा आचार्य कौटिल्य के विचारों की महती भूमिका रही है, क्योंकि इस परम्परा में पूर्ववर्ती चिन्तन परम्परा का समावेश था जिसे भारतीय ऋषियों, मुनियों, भिक्षुओं व उपासकों एवं संत परम्परा ने अपने जीवन की साधना तप एवं त्याग से प्राप्त किया था। वास्तविकता यह है कि पं० दीनदयाल उपाध्याय जी की पूरी पृष्ठभूमि ऐतिहासिक थी, सम्राट चन्द्रगुप्त उपन्यास की रचना उन्होंने वर्ष 1946 में बाल सुलथ भाषा में बाल साहित्य के रूप में तत्कालीन प्रान्त प्रचारक श्री भाऊरास देवरस जी के अनुरोध पर एक रात में लिख दिया जिसका प्रकाशन वर्ष 1946 में ही हुआ।

एकात्म मानववाद का सांस्कृतिक विवेचना

पं० दीनदयाल जी का मानना है कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति को अपने चिन्तन में एक महत्वपूर्ण स्थान दिया है। आगे उन्होंने स्पष्ट किया है कि विश्व के अन्य संस्कृतियों में विशेषता लिए हुए होते है जिसमें केवल एक पक्ष को ही महत्व प्रदान किया जाता है परन्तु भारतीय संस्कृति सभ्यता में मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा अध्यात्मिक प्राण पद प्रतिष्ठा गरिमा प्राप्त है। मानव मूल्य का सरोकार व्याप्त है। मानव के चतुर्विध सुख हेतु चतुर्थ पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की व्यवस्था दी गयी है। इस प्रकार प्रतिष्ठित करने का पुण्य कार्य किये है।

एकात्म मानववाद– पं० दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद का दर्शन का महत्व इस लिए बढ़ जाता है क्योंकि यह दर्शन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, प्रकृति एवं परमेश्वर का संम्पूर्ण एकात्म भाव से अध्ययन करती है। एकात्म मानववाद प्रत्येक मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का एक एकीकृत स्वरूप होता है इन्होंने कहा है कि भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में पश्चिमी अवधारणाओं जैसे व्यक्तिवाद, जनतंत्र, समाजवाद, साम्यवाद पर निर्भर नहीं हो सकता।

पं० दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि चाहे वह पूंजीवाद हो या साम्यवाद, समाजवाद हो या व्यक्तिवाद, सबकी अपनी–अपनी अवधारणा या विचारधारा होती है। क्योंकि ये वाद संकीर्ण विचारधारा के दायरे से आबद्ध रही है इनकी जड़े विदेशी विचारधारा की है और इन सबने भिन्न–भिन्न सभ्यताओं के मूल में स्थित मनुष्य चिंतन का विश्लेषण किया है। जब तक मनुष्य के समग्र व संम्पूर्णता से चिंतन नहीं किया जाएगा तब तक उनकी समस्याओं का सर्वांगीण विकास नहीं किया जा सकता। इसलिए उन्होंने मनुष्य का समग्र चिंतन करते हुए जिस दर्शन का प्रतिपादन किया उसे एकात्म मानव दर्शन कहा गया। एकात्म मानववाद मानव जीवन व संपूर्ण सृष्टि के एकमात्र संबंध का दर्शन है। और इसका वैज्ञानिक विवेचन पं० दीनदयाल उपाध्याय द्वारा 22–25 अप्रैल 1965 ई० को मुंबई में दिए गए अपने विचारों में प्रस्तुत किया। अपने विचार को संपूर्ण सृष्टि का एकमात्र दर्शन बताते हुए मानव कल्याण सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक नीति के सिद्धांतों को जनता के सामने रखा जो अतुलनीय व अद्भुत है। वास्तव में पंडित जी ने जो चिंतन दिया था वह मनुष्य का समग्र चिंतन था और उन्होंने मनुष्यता को वैश्विक चेतना का आधार माना। एकात्म मानववाद एक ऐसी धारणा है जो व्यक्ति के केंद्र में निहित होकर मानव समाज, जाति, राष्ट्र, विश्व और फिर अनंत ब्रह्मांड को अपने में समाविष्ट करता है। इस अखंड मण्डलाकृति में एक व्यक्ति से दूसरे फिर तीसरे व्यक्ति का विकास सुनिश्चित हो जाता है। सभी एक दूसरे से जुड़कर अपना अस्तित्व साधते हुए एक दूसरे के पूरक व सहयोगी साबित होते हैं इनमें कोई संघर्ष नहीं होता। भारतीय चिंतन में जिस तरह से सृष्टि और समष्टि को एक समग्र रूप में देखा जाता है वैसे ही पं० दीनदयाल ने मानव समाज, प्रकृति व उसके संबंधों को समग्र रूप में देखा। मनुष्य को एकात्मक मानव दर्शन में तन, मन, बुद्धि और आत्मा का सम्मिलित स्वरूप माना गया है। मानव की यह समग्रता ही उसे समाज के लिए उपर्युक्त और उपादेय बनती है।

भारतीय चिंतन द्वारा प्रतिपादित धर्म, अर्थ, काम के प्रतीकों के रूप में मानव आत्मा को मोक्ष प्राप्ति की ओर प्रगति करने वाला विचार एकात्मक मानववाद में समाविष्ट है।

एकात्म मानववाद की वर्तमान में प्रासंगिकता–

एकात्म मानववाद संपूर्ण मानव दर्शन को निर्मित करने वाले इन चार तत्वों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) में सम्मिलित करता है क्योंकि यह दर्शन मनुष्य समाज को कर्मठता की ओर प्रेरित कर उद्यमी एवं आत्मनिर्भर बना सकता है। जिससे समाज का हित संवर्धन संभव है। इसमें राजनीति, समाजनीति, अर्थव्यवस्था उद्योग, उत्पादन शिक्षा और लोक नीति पर विशेष बल दिया जा रहा है। जिन्हें आज केंद्र में भाजपा सरकार अपना मार्गदर्शक सिद्धांत मानती है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा पेश की गई ज्यादातर योजनाएँ एकात्म मानव दर्शन पर आधारित है। जैसे दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना, स्टार्टअप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया, मुद्रा बैंक योजना, पं० दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना,

सांसद आदर्श ग्राम योजना, तथा मेक इन इंडिया आदि एकात्म मानववाद के सिद्धांत से प्रेरित है। सबका साथ, सबका विकास जैसा नारा आज भी उन्हें की अंत्योदय (समाज के अंतिम व्यक्ति का उत्थान) की अवधारणा पर आधारित है।

समाज के प्रत्येक व्यक्ति के मन में एकात्मकता का भाव होना चाहिए । ऐसा होने से उसका व्यक्तित्व नष्ट नहीं होगा बल्कि और भी विकसित होगा। व्यक्ति की स्वतंत्रता समाप्त नहीं होगी बल्कि समाज की विराटता में मिलकर और भी विराट हो जाएगी।

हम ऐसे भारत का निर्माण करेंगे जो आगे चलकर हमारे पूर्वजों को भारतीय होने पर गौरवशाली महसूस होगा। जिसमें जन्मा मानव अपने व्यक्तित्व का विकास करता हुआ संम्पूर्ण मानवता ही नहीं अपितु सृष्टि के साथ एकात्मकता का साक्षात्कार करके नर से नारायण बनने में समर्थ हो सकेगा। यही हमारी संस्कृति का शाश्वत दैवीय प्रवाहमान रूप है।

पं० दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारतीय संस्कृति, व्यक्ति और समाज, राजनीति और अर्थनीति को एकात्म मानववाद के चिंतन दृष्टि का आधार तय किया। उनके सिद्धांत का आधार संपूर्ण मानव का ज्ञान है, जो उपलब्धियों से संकलित है उनके सिद्धांतों पर विचार करते समय इस बात पर जोर दिया जाता है कि जो हमारा है। उसे युगानुकूल बनाएं तथा जो बाहर का है उसे देशानुकूल बनाकर विचार करें संपूर्ण समाज का ऐतिहासिक विकास और राष्ट्रीय चरित्र राजनीतिक संस्कृति का प्रत्यय है। मानवता इसका आधारभूत पक्ष है। भारत में मानववाद के आधारभूत तत्व पर विचार करने के लिए दीनदयाल के विचारों की प्रासंगिकता विचार के रूप में सोचना और समझना उचित होगा।

निष्कर्ष– पं० दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद का दर्शन संपूर्ण मानव कल्याण के समग्र विचार का समर्थन करता है। यह दर्शन अनियंत्रित उपभोक्तावाद तथा तीव्र औद्योगिक करण का विरोध करता है। क्योंकि इसका लाभ पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुंच पाता यह सिद्धांत वर्तमान में सभी के समावेशी विकास के संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिक व लाभप्रद है। एकात्म मानववाद का दर्शन लोकतंत्र, समाजिक समानता तथा मानवाधिकारों के विचारों का भी समर्थन करता है तथा साथ ही साथ सभी धर्म और सम्प्रदायों का सम्मान तथा उनकी सामान्य धर्म राज्य की महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। पं० दीनदयाल के दर्शन का कर प्रत्येक मनुष्य को गौरवपूर्ण जीवन प्रदान करता है। इस प्रकार यह उन सिद्धांतों और नीतियों को प्रोत्साहित करता है जो श्रम, प्राकृतिक संसाधनों तथा पूंजी के उपयोग को संतुलित करने में सक्षम होता है। पंडित जी का सिद्धांत इस मिट्टी में गहराई तक निहित था और उनके दर्शन के निशान इस देश के सांस्कृतिक लोकाचार में पाए जा सकते हैं जो हजारों साल पुराने हैं। उन्होंने न केवल सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विचारधारा के लिए एक कैडर तैयार किया बल्कि अपने द्वारा प्रतिपादित आदर्शो का साकार करने के लिए संगठन का एक मजबूत आधार भी दिया। इसी सिद्धांत पर प्रधानमंत्री मोदी जी का सबका साथ–सबका विकास, सबका विश्वास के मूल मंत्र के साथ लगातार काम कर रहे हैं। वर्तमान भाजपा सरकार के कार्यक्रम और नीतियां दीनदयाल उपाध्याय के आदर्शों की कल्पना करते हैं जिन्हें अब प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली वर्तमान सरकार समाज के वंचित वर्गों से सशक्त बनाने और सभी के लिए सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। इसीलिए दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का अध्ययन करना अधिक अनिवार्य हो जाता है। अतः वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य मे उपाध्याय के विचारों की महत्ता और ज्यादा बढ़ गई है।

संदर्भ सूची

1– उपाध्याय, दीनदयाल (2004) ''एकात्म मानववाद'' जागृति प्रकाशन नोएडा (उ०प्र०) पृष्ठ 25 संस्करण–1990 पृष्ठ संख्या–35
2– शर्मा डा० महेश चंद्र 2017, ''पं० दीनदयाल उपाध्याय कर्तव्य एवं विचार" प्रभात पेपर बैक्स नई दिल्ली।
3– देवघर विश्वनाथ नारायण 2014, ''पं० दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन" खंड–7 (व्यक्ति दर्शन) सुरुचि प्रकाशन, केशवकुंज, झंडेवालान, नई दिल्ली।
4– उपाध्याय पं० दीनदयाल ''पॉलिटिकल डायरी'' सुरुचि प्रकाशन, द्वितीय संस्करण नई दिल्ली, 1991
5– उपाध्याय पं० दीनदयाल एकात्म मानववादः जागृति प्रकाशन नोएडा 2004
6– राष्ट्र की अवधारणा सुरुचि प्रकाशन नई दिल्ली 1991
7– नेने, विनायक वासुदेव, पं० दीनदयाल विचार दर्शन खंड–2 एकात्म मानव दर्शन, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1990